

## सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह और महात्मा गांधी : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

**रवि कुमार (शोध छात्र)**

विभाग – गांधी एवं शांति अध्ययन

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

### सारांश

एक प्रगतिशील समाज ही एक राज्य व राष्ट्र को अनुकूल दिशा की ओर बढ़ाता है। जिस हेतु सर्वप्रथम समाज में कुछ नैतिक व सार्वभौमिक गुण संदर्भित होते हैं। इस नैतिक गुण के आयाम अलग हो सकते हैं, परन्तु उनका मूल भूत उद्देश्य एक स्वच्छ व स्वस्थ समाज को परम्परागत जड़ता से दूर करके उसे वैज्ञानिक व तार्किक आधार प्रदान करना है। स्वच्छता मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। साफ-सफाई का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से है, और जीवन जीने के लिए स्वच्छता एक अनिवार्य पहलू भी है। महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था, उसमें सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं स्वस्थ देश की कल्पना भी थी। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गाँधी की कर्म भूमि चंपारण में गाँधी के द्वारा चलाए गए चंपारण सत्याग्रह में गाँधी ने निलहों के जुलूम से चंपारण वासियों को तो बचाया, साथ ही उन्होंने लोगों में एक जन जागृति की लहर ला दी। जिसके बाद समाज में तमाम समस्याओं पर लोगों का ध्यान आकृष्ट होने लगा। इस समय सबसे बड़ी समस्या अस्वच्छता थी जो की कई बिमारियों को जन्म दे रही थी। इस हेतु गाँधी ने अपने विचारों से चंपारण वाशियों समेत देश वाशियों को भी जागृत किया, गाँधी के सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह के मुहीम की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई है।

**मुख्य बिन्दु :** वैज्ञानिक, प्रगतिशील, चंपारण, आजादी, हमारा कर्तव्य ।

### प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही स्वच्छता को जीवन जीने का एक व्यवहारिक सिद्धांत माना गया है, स्वच्छता को एक बुनियादी कर्तव्य और नैतिकता के रूप में जीवन जीने के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक माना गया है। एक स्वस्थ, शुद्ध और आध्यात्मिक जीवन अत्यंत व्यावहारिक है, स्वच्छता का शाब्दिक अर्थ है पवित्रता या शुद्धता होता है। “दक्ष स्मृति में कहा गया है कि व्यक्ति को स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए वह जो भी काम करे उसमें शौच को हमेशा बनाए रखने की कोशिश करें और स्वच्छता या पवित्रता के इस तरह के पालन के बिना, सभी कार्य निष्फल हो जाता है”<sup>1</sup>। “शौच” का शाब्दिक अर्थ है स्वच्छता और पवित्रता (श्लोक 5.2).

“शौचेयत्नसदाकार्यः शौचमूलोद्विजः स्मृतः

शौचाचारविहीनस्यसमस्तनिष्फलाः क्रियाः”<sup>2</sup> (दक्ष स्मृति 5.2)

हमारे पूर्वज बहुत चिंतित थे स्वच्छता का ध्यान रखें, हाथों और पैरों को नियमित रूप से साफ रखने की आदतों से सुरक्षित रहें बैक्टीरिया और अन्य संक्रमणों के उपचार के लिए योग-सूत्रों का अभ्यास किया। पतंजलि ने शौच का वर्णन इस प्रकार किया है- “शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सापै रसंसर्ग”<sup>3</sup> (पतंजलि योग सूत्र, 2.40)

“सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्व”<sup>4</sup> ( पतंजलि योग सूत्र, 2.41)

इसका अर्थ यह हुआ कि शौच वह है जिससे आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के पापों का नाश हो अस्वच्छता स्थापित होने से अपमान उत्पन्न होता है अपने शरीर के लिए भी, और अन्य निकायों के साथ भी। वहाँ भी शुद्धि होती है जहां सत्य मन की प्रसन्नता, एकाग्रता, क्रोध पर विजय अंगों की मजबूती, तथा आत्म-साक्षात्कार के लिए उपयुक्तता हो। “शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधाननिनियम”<sup>5</sup> ( पतंजलि योग सूत्र, 2.32)

इसका अर्थ है आंतरिक और बाह्य शुद्धि, संतोष, वैराग्य, अध्ययन और ईश्वर की आराधना है

महात्मा गाँधी की इस परिकल्पणा को सजीव आकार मिल सके, इस कारण महात्मा गाँधी के दर्शन की अवधारणा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। लोगों में स्वच्छता की आदतों का विकास करना हम सबकी आदत होती है कि जहां कहीं भी गंदगी दिखाई देती है, नाक-भौं सिकोड़ते हैं और व्यवस्थाओं को कोसते हैं। विशेषकर सरकार को कोसते थकते नहीं। परंतु खुद आदत से मजबूर होकर गंदगी करने से बाज नहीं आते। हमारे देश में मल-मूत्र का त्याग कहीं भी करना एक आम आदत है। इसका एक कारण तो प्रायः इसके लिए उपयुक्त सुविधा का अभाव है। पान, गुटखा, तंबाकू आदि खाकर जहां-तहां मुंह से पिचकारी छोड़ने में हमें शर्म नहीं आती। अक्सर हमारे द्वारा दीवार पर की गई यह चित्रकारी विदेशियों एवं अन्य लोगों के समक्ष एक भद्दा उदाहरण प्रस्तुत करती है। गांधी एक सृजनात्मक व्यक्ति थे और वह अपने समय की चुनौतियों का सामना करने के वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए उदाहरण भी पेश करने वाले व्यक्ति थे। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन ने ठीक ही कहा है कि “आने वाली पीढ़ियां शायद ही इस बात पर भरोसा करेंगी कि इस तरह का कोई इंसान कभी इस धरती पर चला भी था”।<sup>6</sup>

“चम्पारण सत्याग्रह जहां एक ओर गांधीजी के जीवन का बोझिल सत्य है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय जागरण का लक्ष्य बिन्दु है जिसने 30 वर्षों बाद आजादी का रूप ग्रहण किया, दक्षिण अफ्रीका से विशाल अनुभव तथा परिपक्वता लेकर 22 वर्षों बाद जब गांधीजी 1915 में भारत लौटे तो उन्होंने यहां की धरती पर पहला सत्याग्रह प्रयोग चम्पारण में ही किया, जिसने चम्पारण और गांधीजी को पूरे विश्व में चर्चित बना दिया”।<sup>7</sup> गांधीजी ने इस आन्दोलन के माध्यम से सत्य, अहिंसा की ताकत क्या है और अशिक्षित तथा निरक्षर जनता के सहारे क्या कुछ किया जा सकता है, यह सारी दुनिया को दिखा दिया। इन सभी हथियारों का विश्लेषण ही चम्पारण सत्याग्रह का मूलमंत्र था। चम्पारण के विषय में अपनी आत्मकथा में गांधीजी ने स्वयं लिखा है कि, बिहार ने ही मुझे सारे हिन्दुस्तान में जाहिर किया। उससे पहले तो मुझे कोई जानता भी न था। पहले मैं जानता भी न था कि चम्पारण कहां है, लेकिन जब यहां आया तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं बिहार के लोगों को सदियों से जानता था और वे भी मुझे पहचानते थे।

आज अणु युग ने मानव के सामने एक चुनौती खड़ी कर दी है। क्योंकि लोगो के पास उतना समय ही नहीं है की वह खुद को और अपने परिवार को उचित समय दे पाए, एक दुसरे से आगे बढ़ने की एक होड़ सी लगी हुई है। इस भाग-दौड़ भरे जीवन में शुद्ध वातावरण में रहना, साफ-सफाई को बनाये रखना एक चुनौती सी हो गई। प्रकृति के महत्वों को जानने के लिए कोरोना जैसी माहामारी एक अवसर बन कर आयी जिसके दौरान लगभग सभी के अंदर साफ-सफाई के प्रति एक चेतना उत्पन्न हो गई। पर अभी भी इसे अपने आदतों में नहीं लाने के कारण विभिन्न प्रकार के बीमारियां समाज में व्याप्त है। महात्मा गाँधी के कर्म भूमि चंपारण की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है बढ़ती जनसँख्या को ध्यान में रखकर अभी भी स्वच्छता के लिए बहुत कुछ किया जाना शेष है। बचपन में महात्मा गांधी के घर में एक युवा सफाईकर्मी रहता था जिसका नाम उका था। एक बहुत ही सम्मानित दीवान (प्रधानमंत्री) के बेटे मोहनदास को उसके साथ खेलने से रोका गया था। अगर गलती से वे दोनों एक दूसरे को छू भी लेते तो गांधीजी की मां उन्हें तुरंत नहलाने ले जाती थीं। उस नौजवान के लिए यह एक बहुत बड़ी गलती थी, जो उसकी संवेदनाओं के प्रति उदासीन थी। अंततः उसने अपनी मां से कहा, “उका गंदगी और मैल साफ करके हमारी सेवा करता है, उसका स्पर्श मुझे कैसे अपवित्र कर सकता है मैं आपकी अवज्ञा नहीं करूंगा, लेकिन रामायण कहती है कि राम ने गुहक नामक चांडाल (अछूत मानी जाने वाली जाति) को गले लगाया था। रामायण हमें गुमराह नहीं कर सकती। यह स्मृति जीवन भर के लिए छाप छोड़ देगी क्योंकि एक नायक को बचपन से ही गढ़ा गया था। उन्होंने एक बार बताया था, “लोगों के प्रति प्रेम ने मेरे जीवन में अस्पृश्यता की समस्या को जन्म दिया”। इसके खिलाफ उनका विद्रोह तब शुरू हुआ जब उन्होंने अपनी मां से पूछा कि उका को छूना पाप क्यों है।

“आजादी से ज्यादा महत्वपूर्ण स्वच्छता है”। गांधी जी अपनी पूरी जिंदगी स्वच्छता को खास एहमियत दिये। उनका मानना था कि जो स्वच्छ है वही स्वस्थ है। अगर व्यक्ति राजनीतिक स्वतंत्र नहीं भी है तो भी वह जीवन यापन अच्छे से व्यतीत कर सकता है, लेकिन अगर वह स्वच्छ नहीं है तो उसके अंदर अच्छे विचारों का आना दुर्लभ सी बात है। महात्मा गांधी का दो बातों पर बहुत ज्यादा जोड़ रहा है ‘एक समय का प्रबंधन और दूसरा सफाई’ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विद्यार्थियों ने गांधी जी से पत्र लिखकर पूछा कि उन्हें गर्मी की छुट्टियों में कहां जाना चाहिए गांधीजी इन पत्र को जवाब देते हुए बड़ी सरलता से कहे

की आप सब गांव में जाकर वहां काम करें और गांव में सफाई पर ग्रामीणों को जागरूक करें जिससे कि उन्हें मालूम हो स्वच्छता क्या है, हमारे जीवन में साफ-सफाई क्यों जरूरी है, स्वच्छता से होने वाले उन तमाम लाभों को जनता से रूबरू कराना। गांधी जी की सफाई के प्रति सजगता का एक प्रसंग यह भी है कि कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने पहुंचे तो सबसे पहले वे रसोई घर में गये वहां की गंदगी देखकर वे नाराज हो उठे और रसोइयों को रसोईघर साफ सुथरा रखने और खुद को स्वच्छ होकर आने की हिदायत दी। बापू के बताए बातों से हम यह जान पड़ते हैं की वह साफ-सफाई के कितने बड़े पक्षधर थे। महत्वपूर्ण बात यह है की बापू केवल बाहरी स्वच्छता पर जोर नहीं देते बल्कि वह आत्म शुद्धि की बात करते, बापू का मानना था की अगर हमारे मन में स्वच्छता का भाव नहीं है तो हमारे पास पड़ोस में शुद्ध व सच्चे एवं ईमानदार विचार आना असंभव है। अपने इस विचार को बापू ने कई समारोहों में पत्र पत्रिकाओं में कहा है की जो सचमुच में साफ-सफाई में विश्वास करता है, वह कभी भी अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता एक सुन्दर, पवित्र, समरस और बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण के लिए बापू के बताये गए साफ-सफाई के प्रति दर्शन से श्रेष्ठ अन्य कोई दर्शन नहीं हो सकता। सेवा का कोई सीमित दायरा नहीं होता है यह एक विस्तृत क्षेत्र है। बापू गांवों में गंदगी को देख कर बढ़ा व्यथित हुए और लोगों से आग्रह किए की साफ-सफाई न केवल हमारे घर, सड़क के लिए ही जरूरी होती है। यह तो सम्पूर्ण देश की महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक है। इससे केवल अपने घर ही नहीं बल्कि आस पड़ोस भी स्वच्छ रहेगा जब हम जिस परिवेश में रहते हैं यहाँ अगर स्वच्छता की अलख जगाई जाए तो इसके माध्यम से पूरा देश भी स्वच्छ हो जायेगा।

“मन की साफ-सफाई पहली वस्तु है, जिसे सर्वप्रथम पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य पाठ स्वच्छता के पाठ के पश्चात भी पढ़ाया व सिखाया जा सकता है, शुद्ध हृदय का वास्तविक होने के लिए शारीरिक स्वच्छता उतनी ही जरूरी है जितना आस-पड़ोस शहर व देश के लिए स्वच्छ रहना”<sup>18</sup> महात्मा गांधी ने स्वच्छता के लिए सिर्फ आम जन को ही प्रेरित नहीं किया बल्कि निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में भी साफ-सफाई को लेकर जागरूकता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया। गांधी के अनुसार किसी भी समाज और संस्थान के सभी लोगो की यह जिम्मेदारी होंगी की वे अपने निवास एवं कार्य स्थलो के परिसर ओर पर्यावरण की स्वच्छता बनाए रखे वहाँ पर किसी भी प्रकार का प्रदूषण न फैलाए। सरकार ओर सरकारी निकाय अपनी सीमा के अंदर ही रह कर यह प्रयास कर सकते हैं परंतु प्रत्येक नागरिक इसे अपना दायित्व समझे तो सम्पूर्ण राष्ट्र को स्वच्छ बनाने के लक्ष्यों की प्राप्ति बहुत ही सरलता पूर्ण तरीके से संभव हो सकती है। गांधी ने स्वच्छता के अपने व्यापक विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किए। पूरे समाज एवं देश को यह संदेश दिया की यदि प्रत्येक व्यक्ति यह जिम्मेदारी उठा ले तो हम एक सुंदर व स्वच्छ देश के निर्माण में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित कर सकते हैं। दक्षिण अफ्रीका में स्वच्छता के लिए बापू किसी और पर निर्भर नहीं रहे बल्कि उन स्थानों की सफाई स्व करते थे जहां वो निवास करते थे। अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान उन्होंने स्वच्छता को लेकर बहुत से प्रेरक उदाहरण समाज के सामने पेश किया वे अपने निवास स्थान के आस-पास की सफाई खुद से करते थे ओर अन्य लोगो को इसके लिए प्रेरित भी करते थे। जब डरबन में फ्लेग जैसी महामारी ने अपनी व्यापकता दिखाई तब भी गांधी जी ने बिना किसी डर ओर झिझक के पूरे शहर की सफाई में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया तथा अपने साथ बहुत से लोगो को आने के लिए प्रेरित किया।

महात्मा गांधी के माध्यम से स्वच्छता के लिए कई कारकों की भूमिका का वर्णन किया गया। मोतिहारी में आगमन के पश्चात सर्वप्रथम गांधी ने स्वच्छता को ही जन उपयोगी व उस हेतु व्यक्ति परख भागीदारी करने को कहा। आस-पड़ोस की नदी तलाब व झिलो में आने वाली मल-मूत्र की अधिकता को देखकर चिंतित थे। नल-नालो द्वारा उनके चिंतन की उत्तेजना अधिक तीव्र तब हो गयी जब उसी तलाब में पशुओं को नहलाया जा रहा तथा कपड़ों की साफ-सफाई के साथ कुछ महिलाएँ उसी तलाब में पानी पीने हेतु घड़ा ले जा रही थी। जिसे वो अपने बच्चों व परिवार के अन्य सदस्यों को उपयोग करने हेतु देंगी। चूँकि वे इतनी शिक्षित व तार्किक नहीं हैं की वे अपने सेहत खराब का मूल कारण पानी पीने को ही मान सके। इसी कारण यहाँ की नदियां जहरीली होती जा रही। यदि ऐसा ही निरंतर हुआ तो हमारी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। हमें पर्यावरणीय आपदा के मुहाने पर खड़े होने से पहले ही बचाव करना है। क्योंकि यदि यहीं परंपरा आने वाली पीढ़ियों में समाहित होगी तो सबसे पवित्र गंगा भी आने वाले दशकों में पूर्ण प्रदूषित हो जाएगी। इस दशा को देख कर गांधी जी अपनी चिंता को नित्य होने वाले प्रार्थना सभाओं में स्पष्ट करते थे। यह बताने का निरंतर प्रयास करते हैं की हमारी प्राचीन सभ्यता ओर संस्कृति में स्वच्छता के शार तत्व हमेंशा से समाहित रहे

थे। गांधी जी सभी रचनात्मक कामों में सफाई को महत्वपूर्ण स्थान देते रहे हैं। वस्तुतः सफाई प्रकृति का एक मौलिक गुण है। प्रत्येक प्राणी को सफाई का बोध रहता है, कहते हैं कि कोई जानवर भी बैठते समय पूँछ से जमीन साफ कर लेता है। सृष्टि के सभी प्राणियों में मनुष्य सर्वोच्च प्राणी समझा जाता है, अतः मनुष्य में सफाई का स्तर सबसे ऊँचा होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य, फिर चाहे किसी पेशे का हो, किसी-न-किसी रूप में अपने घर-द्वार की सफाई किया करता है। घर के बाहर, समाज में अथवा दूसरों से मिलने के लिए साफ कपड़े पहनकर जाने के पीछे सफाई संबंधी एक सामाजिक प्रतिष्ठा छिपी है। दूसरों के सामने अपनी गंदगी जाहिर होने में आदमी शर्म का अनुभव करने लगता है। “मनुष्य की मूल प्रवृत्ति आत्मरक्षा है, इसलिए उसकी चेष्टा अपनी जान बचाने के साधन एकत्र करने की है, अन्न और वस्त्र जीवन-यापन के मुख्य साधन हैं”<sup>9</sup> यही कारण है कि हम कृषि और कटाई को मूल उद्योग मानते हैं। किंतु मनुष्य की जिंदगी व्यक्तिगत ही नहीं है, उसकी सामाजिक जिंदगी भी है। उसे अपनी व्यक्तिगत रक्षा के लिए सामाजिक रक्षा की आवश्यकता पड़ती है। सफाई का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बिना समाज टिक नहीं सकता। अतः जिस प्रकार व्यक्तिगत जिंदगी के लिए कृषि और कटाई को मूल उद्योग माना गया है, उसी प्रकार सफाई को सामाजिक जिंदगी का मूल उद्योग मानना पड़ेगा। उद्योग की प्रक्रियाओं का परिणाम है, आर्थिक उत्पादन जिसे कूड़ा-करकट समझकर फेंक दिया जाता है, उसकी व्यवस्था यदि वैज्ञानिक ढंग से की जाए, तो आसानी से उसे उत्पादन का जरिया बना सकते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य की स्वाभाविक सौंदर्य-वृत्ति के कारण ही उसमें सफाई की प्रवृत्ति पैदा होती है और कला की उत्पत्ति भी मनुष्य की सौंदर्योपासना का परिणाम है। लेकिन मनुष्य-समाज की अन्य प्रवृत्तियाँ जैसे-जैसे जटिल बनती जाती हैं, वैसे-वैसे कला की धारणा में भी परिवर्तन होता रहता है। “आज संसार में जो प्रवृत्तियाँ चल रही हैं, वे प्रकृति से इतनी दूर हैं कि ऐसा लगता है कि मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का एक-दूसरे से कोई संबंध ही नहीं रह गया है”<sup>10</sup> “कलाकार वह है जो अपनी आँखों के सामने किसी भी किस्म की भद्दी और गंदी चीज को बर्दाश्त नहीं करता और उसे साफ किए बिना चैन नहीं पाता”<sup>11</sup> सत्याग्रह और स्वच्छाग्रह दोनों ही नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर बल देते हैं। गांधीजी की विचारधारा आज भी सामाजिक बदलाव के लिए मार्गदर्शक है। हिंसा, असहिष्णुता और प्रदूषण से जूझते वर्तमान समाज में गांधीजी के स्वच्छता रूपी सिद्धांत एक आशा की किरण हैं। स्वच्छाग्रह केवल शारीरिक स्वच्छता नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक शुद्धता की दिशा में भी एक कदम है।

## निष्कर्ष

स्वच्छता मानव जीवन का अभिन्न अंग है। स्वच्छता का सीधा संबंध स्वास्थ्य से है। इसलिए जीवन के लिए स्वच्छता अनिवार्य है। स्वच्छता शरीर एवं घर-परिवार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि स्वच्छता से तात्पर्य व्यक्तिगत स्वच्छता के अतिरिक्त गली, मोहल्ले और गांव की संपूर्ण स्वच्छता से है। बिना उपचारित सिवेज हमारे यहां जल-प्रदूषण का एक सबसे बड़ा महत्वपूर्ण कारण है। हमारा देश कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर आधारित है इसलिए अपने नागरिकों को पूर्णतया स्वस्थ बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। 2 अक्टूबर, 2014 से देशभर में 'स्वच्छ भारत अभियान' प्रारंभ किया गया। इस अभियान को प्रारंभ करने के लिए गांधी जयंती का अवसर चुना गया क्योंकि स्वच्छ भारत का सपना गांधीजी ने ही संजोया था। उनके सपनों का भारत बनाने के इस अभियान को उनकी 150वीं जयंती यानी 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था। महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था, उसमें सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी। महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर मां भारती को आजाद कराया। अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें। राष्ट्र जीवन के नवनिर्माण के लिए समाज सुधार के क्षेत्र में गांधी जी की देन महत्वपूर्ण रही है स्वच्छ वातावरण न केवल स्वास्थ्य को अच्छा रखने में मददगार होगा बल्कि विदेशों में भारत की एक अच्छी छवि का निर्माण होगा महात्मा गांधी के स्वच्छता के सिद्धांतों की शक्ति आज भी जीवंत है। सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई जीती, और स्वच्छाग्रह के रूप में आज उनकी विचारधारा स्वच्छता, सामाजिक चेतना और नागरिक कर्तव्य का प्रतीक बन गई है। आज आवश्यकता है कि हम गांधीजी की मूल भावना को समझकर उसे अपने जीवन और समाज में उतारें, जिससे एक समावेशी, स्वच्छ और नैतिक रूप से समृद्ध भारत का निर्माण हो सके।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दक्ष स्मृति 5.2
2. दक्ष स्मृति 5.2
3. पतंजलि योग सूत्र, 2.40
4. पतंजलि योग सूत्र, 2.41
5. पतंजलि योग सूत्र, 2.32
6. गाँधी, एम.के. (2021)। ग्राम स्वराज प्रभात पेपरबैक्स। न्यू दिल्ली.
7. प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र. (2017). चंपारण में महात्मा गाँधी. प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली.
8. [https://www.google.com/search?q=%E2%80%9C%E0%A4%AE%E0%A4%A8+](https://www.google.com/search?q=%E2%80%9C%E0%A4%AE%E0%A4%A8+%)
9. <https://www.google.com/search?q=%E2%80%>
10. <https://hi.wikipedia.org/wiki/%>
11. <https://hindi.indiawaterportal.org/books/saphaa-i-kaa-mahatava>